मोरंगे

मई – जून 2024

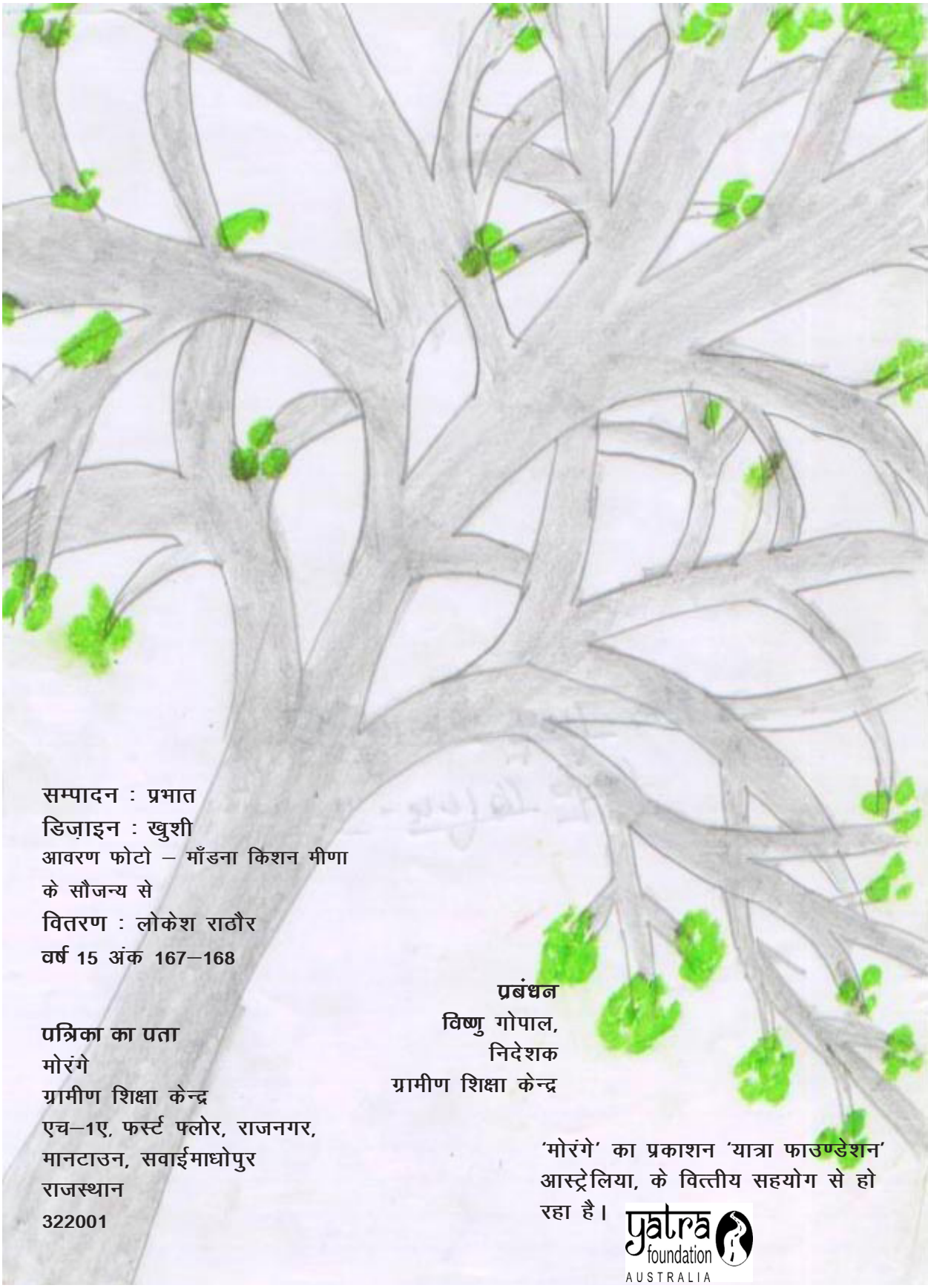

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : खुशी
आवरण फोटो – माँडना किशन मीणा
के सौजन्य से
वितरण : लोकेश राठौर
वर्ष 15 अंक 167–168

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1ए, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर,
मानटाउन, सवाईमाधोपुर
राजस्थान
322001

प्रबंधन
विष्णु गोपाल,
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

yatra foundation
AUSTRALIA

इ
स
बा
र

खिड़की
टाउल टापुल

गीत-कविताएँ
बात
एक टमाटर
छुट्टी
चाचा चाची
सेठी जी, टीसी कटा ला
चीक चीक चीक
काँई च
बात खूँ साँची
अटकण बटकण

कहानियाँ
मजाक
घबराने की बात नहीं है
तालाब के फूल
पास भी नहीं दूर भी नहीं
दोस्ती

याद की धूप-छाँव में
दो दिन का साथ

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर
चूजे का रुदन
सुख दुख

बात लै चीत लै
रेजाहाड़ा

बतरस

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

खिड़की

1
चींटी चढ़ी पहाड़

चींटी चढ़ी पहाड़
पेड़ पे आ के अटकी
डाल पेड़ की चटकी।

2
नाम पूछो तो नदी बताती है

(छह साल की शिप्पू)

मुँह से सुनती है
आँख से बोलती है
कान से खाती है
नाक से चलती है
पाँव से सूँधती है
मन से देखती है
सोते में जागती है
जागते में ऊँघती है
धूप से खेलती है
हवा से बतियाती है
नाम पूछो तो नदी बताती है
नदी कौनसी?
कहती है – प्राशिप्राशिप्राशिप्राशिप्राशिप्रा...

कहती ही जाती है
बहती ही जाती है

एक कवि हैं श्याम सुशील, कविता लिखने के शौकीन।
हमने उनकी किताब से लेकर, मोरंगे में छापी तीन।
और अधिक पढ़ना चाहो तो पढिए बिल्कुल
लाइब्रेरी में किताब है उनकी– टाउल टापुल।

3
टाउल टापुल

उसको सब टाउल टापुल कहते हैं
अकसर पुलटा करती फिरती है

स्कूल जाना को ना जा लकूस कहती है
तस्दो दोस्त और किताब को ताकिब

टीरो नीपा जीरो पीपा क्या क्या कहती है
उलटी पुलटी दुनिया में खुश खुश रहती है

मीम्म मीम्म मम्मी पापा को पापा कहती है
नाम है उसका गंगा लेकिन उलटी बहती है।

(फोटो में– हल्के लाल कुर्ते में हिन्दी के प्रसिद्ध कवि आलोक धन्वा के साथ हल्की जामुनी शर्ट में कवि श्याम सुशील।)

गीत कविताएँ

सेठ जी

एबीसीडीईएफजी
गधा चरावै सेठ जी
मत रोवै सेठाणी जी
और लियांगा सेठ जी

मनीषा, रोहित, पवन, फेला।

बात

बात खूँ रे काचरा
हूँकारा दै रे बाकरा
सीकरी सूँ बात चली
पौंच गई आगरा।

ज्योति बैरवा, फेलो।

छुट्टी

चक्की में चक्की
चक्की में दाना
कल की छुट्टी
परसों आना।

विकास बैरवा, फेलो।

चाचा चाची

चाचा चाची की दूकान
चाचो खाग्यो मीठा पान
चाची करगी ऊँचा कान।

विमला बैरवा, फेलो।

टीसी कटा ला

अ अनार वाला
आ आम वाला
नीं पढ़ै तो लाला
थारी जीजी कू बुला ला
टीसी कटा ला।

मनीषा, रोहित, पवन, फेलो।

एक टमाटर

एक टमाटर पढ़ा लिखा
ताँगे के नीचे आ गया
ताँगे से तो बच गया, बस की
टक्कर से घबरा गया।

सुमन ढोली, फेलो।

चीक चीक चीक

चीक चीक चीक
चीक चीक चीक
चिड़िया बोली
ठीक ठीक ठीक
हरिया बोलै बागन कौ
नाँव बताओ गायन कौ
धौळी धूमड़ काळी कामड़
लीली का कान घणा झाबर
मेरै हाथ मं से हँडिया छूट गईअ
मेरी किसन डबूड़ी फूट गईअ
दूधन से धरती भन्नागी
काका से काकी तन्नागी
दौड़ी दौड़ी जार बुला लइयौ
बेगे बेगे घर कू आ जइयौ

कविता बैरवा, बोदल।

कांई च

काँई च भई काँई च
बिल्ली की सगाई च
फिटफिटिया को दादो मरग्यो
खीचड़ी रंदाई च
खीचड़ी पातळ मं घाली
कूकरा नं खाई च
कूकरा की जीब बळगी
नरसबाई आई च
कूकरा कू पीबा काणैं
कड़ी कड़ी दवाई च।

रीना गुर्जर, फेलो, बेरना।

अटकण बटकण

अटकण बटकण
दही चटोकण
मामो लायौ सात कटोरी
एक कटोरी फूटगी
ममी म्हारी रूँसगी
काँइ बात प रूँसी
दहीबड़ा प रूँसी
दही मं गिरग्यौ अण्डो
आकासा मं चन्दौ।

रविना शर्मा, कक्षा – 7, फरिया।

बात कहूँ साँची

बात कहूँ साँची
धन्या की बहू नाची

धन्या नं फेंक्यौ गोळो
बबाजी होग्यौ बोड़ौ

बाबाजी नं फेंकी तूमी
जार् झाड़ मं लूमी

झाड़ नं फेंक्या दो बोर
खाती का घर मं घुसग्या चोर

चोर नं बजायौ ढोल
सब नं सुण लिया बोल

हँदेरी छी रात
जा नाची बारात

भारती माली, कक्षा–6, उम्र – 12 वर्ष, फरिया।

(इन सभी लोक कविताओं का संकलन जगनपुरा में आयोजित कार्यशाला के दौरान फेलोज द्वारा किया गया है। सभी का पुनर्लेखन प्रभात ने किया है।)

कहानियाँ

मजाक

एक दिन हिरणी ने अपने बच्चे से कहा–'बेटा तुम कितने अच्छे हो।'
हिरणी का बच्चा बोला–'माँ तुम कितनी अच्छी हो।'
हिरणी ने कहा –'बेटा मैं मर गई तो?'
हिरणी के बच्चे ने कहा–'माँ तू मत मर।'
हिरणी ने कहा–'बेटा एक दिन तो मरना ही पड़ेगा।'
बच्चे ने कहा–'माँ तुम मर जाओ। मैं तुम्हें जिन्दा कर लूँगा।'
हिरणी ने कहा–'बेटा मैं तो मजाक कर रही थी।'
बच्चे ने कहा–'मैं भी तो मजाक ही कर रहा था। मैंने देखा है जिस हिरण को बाघ मारकर खा जाता है। वह फिर कभी नहीं दिखाई देता है। उसे कोई भी जिन्दा नहीं कर पाता है।'
हिरणी ने बच्चे को प्यार से गले लगा लिया। फिर वे दोनों जंगल के घने पेड़ों के नीचे चले गए। जहाँ और भी हिरण चर रहे थे। जहाँ नर्म हरी घास थी।

मूर्ति गुर्जर, कक्षा-6, समूह -लोटस, गिर्राजपुरा।

पास भी नहीं, दूर भी नहीं

एक गाँव था। गाँव के पास ही नदी थी। गाँव के लोग नदी का पानी पीते। नदी के पास ही फसल उगाते। खेतों में ज्यादा पानी भी नहीं देना पड़ता। ऐसे ही उनका काम चल रहा था। गाँव के सब लोग खुश थे। कुछ लोग नदी में मछली भी पकड़ते।
हर साल की तरह नदी में बाढ़ आई तो लोग ऊँचाई वाली जगह पर रहने चले गए। जब नदी का पानी कम हो गया तो वापस अपनी जगह पर आ गए। उनके घर ठीक थे लेकिन फसल खराब हो गई थी। उन्होंने फिर से खेत तैयार किए। उनमें फसल की। लेकिन फिर बाढ़ आ गई। नदी का पानी गाँव में घुस गया। इस बार ज्यादा पानी आने के कारण उनके घर भी ढह गए। इस बार वे अपनी जगह पर वापस नहीं गए। उन्होंने नदी से बहुत दूर अपने घर बनाए। और वहाँ पर रहने लग गए। अब उनके पास पानी नहीं था। बहुत दूर से पानी लाना पड़ता। पानी नहीं मिलने से फसल जलने लगी। तो वे फिर से नदी के पास गए। और उन्होंने सोचा कि हम नदी के ज्यादा पास भी नहीं रहेंगे और ज्यादा दूर भी नहीं रहेंगे।
अब उन्होंने नदी थोड़ी दूर घर बनाए और रहने लगे। पास ही खेत तैयार किए। अब उनकी फसल जलती भी नहीं और डूबती भी नहीं।

दिनेश गुर्जर, कक्षा - 7, समूह -लोटस, गिर्राजपुरा।

दोस्ती

दो दोस्त थे। सोनू और संदीप। दोनों की दोस्ती बहुत पक्की थी।
हर दिन की तरह सोनू ने संदीप के घर आकर कहा कि सकूल चलें भाई।
लेकिन उस दिन संदीप को बुखार आ गया था। संदीप ने कहा–'भाई तू चला जा। मुझे तो आज बुखार आ गया।'
सोनू ने कहा–'तेरे बिना मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।'
संदीप ने कहा–'भाई बिना तू छुट्टी क्यो कर रहा है?'
सोनू कहता है–'भाई दोस्ती से बढ़कर कुछ भी नहीं है।'
दो दिन बाद दोनों साथ–साथ स्कूल जाते हैं।
दोनों को सर ने बहुत डाँटा। सर ने सोनू के डण्डे से मार दी।
संदीप ने कहा–'जिस तरह आपने सोनू के डण्डे की दी है, ऐसे ही मेरे भी दो।'
सर ने कहा–'तुम क्यों मार खाना चाहते हो?'
संदीप ने कहा–'सर से मेरा खास प्रेमी दोस्त है। मैं इसके लिए जान भी दे सकता हूँ।'
उनकी सच्ची दोस्ती देखकर सर की आँखों में आँसू आ गए। वे भूँ–भूँ रोते हुए बोले–'मैंने तुम्हारी जैसी दोस्ती कभी नहीं देखी। आज के बाद मैं एक को भी नहीं पीटूँगा ताकि दूसरे को बिना बात न पीटना पड़े।'

हिमांशु गुर्जर, कक्षा-5, समूह-लोटस, गिर्राजपुरा।

घबराने की बात नहीं है

एक जंगल में बहुत सारे मोर रहते थे। एक दिन आँधी आई तो बहुत सारे सूखे पेड़ टूट गए। एक मोर के पैर में चोट लग गई। वह तकलीफ से परेशान बैठा था।तभी वहाँ एक लकड़बग्घा आया। उसने मोर से पूछा–'मोर मोर आपके क्या हो गया है?'

मोर कहता है कि 'मैं एक सूखे से पेड़ पर बैठा था। आँधी आई तो मैं पेड़ से नीचे गिर गया और मेरे पैर पर डाल गिर गई। तुम मुझे मेरे दोस्त के पास छोड़ आओ।'

लकड़बग्घा मोर को पीठ पर बिठाकर उसके दोस्त के पास ले गया।

मोर के दोस्त ने लकड़बग्घे से कहा–'इसे कौआ डॉक्टर के पास लेकर चलते हैं।'

फिर वे दोनों उसे कौआ डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने उसका इलाज किया।

कौआ डॉक्टर के भी पाँव में पट्टी बँधी देखकर तीनों ने पूछा–'आपके पैर में क्या हुआ डॉक्टर।'

कौआ डॉक्टर ने बताया–'कल रात मैं एक सूखे पेड़ पर बैठा था। आँधी में मैं गिर गया और पेड़ की डाल मेरे पैर पर गिर गई। उसी से ये चोट लग गई। लेकिन अब ठीक है। मैं चल सकता हूँ।'

कौअे ने चलकर दिखाया और मोर से कहा–'तुम भी जरा चलकर दिखाओ।'

मोर ने चलने की कोशिश की तो दर्द हुआ वह जोर से चिल्लाया–'केंहोंऽऽ। उसकी आवाज सुनकर जंगल के सारे मोरे बोलने लगे–'केंहोंऽऽ केंहोंऽऽ।' उनकी आवाज सुनकर बादल गरजने लगे। बूँदे गिरने लगी।

कौआ डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा–'घबराने की कोई बात नहीं है। आँधी के बाद अक्सर बारिश आती है।'

मोर और उसका दोस्त एक मजबूत हरे पेड़ पर चले गए। लकड़बग्घा पहाड़ी खोह में। उनके जाने के बाद कौआ डॉक्टर ने अपने घर के खिड़की दरवाजे बंद कर लिए।

पिंकेश गुर्जर, कक्षा-7, समूह -लोटस, गिर्राजपुरा।

तालाब के फूल

राजस्थान के एक गाँव में एक गरीब बुढ़िया थी। वह टूटी झोंपड़ी में रहती थी। उसकी झोंपड़ी के पास एक तालाब था। तालाब में बहुत सुंदर–सुंदर फूल खिलते थे। वह वहाँ जाती और फूल तोड़ कर लाती थी। उन्हें बाजार में ले जाकर बेचती थी। उससे वह अपना गुजारा चलाती थी।

एक बार उधर बारिश ही नहीं हुई। बारिश का मौसम सूखा ही निकल गया। धीरे धीरे तालाब सूख गया और तालाब के फूल भी धीरे–धीरे सूखने लगे गये। बुढ़िया वहाँ रोज जाकर तालाब के चारों तरफ घूम–घूम कर देखती और सोचती की अब क्या होगा।

वे जानवर जो दिन में पानी पीने आते थे, पता नहीं कहाँ गए। और वे जो रात में पानी पीने आते थे लोमड़ी, सियार, खरगोश, भेड़िए, तेंदुए आदि जानवर वे भी पता नहीं कहाँ गए। बच्चे दिन में तालाब के फूल देखने आया करते थे। औरतें आती थीं। चरवाहे और गडरिए आते थे। अब कोई उधर नहीं आता था। तालाब के पूरी तरह सूख जाने से बुढिया के जीवन में भी सूखापन और खालीपन आ गया। अब तालाब पर कोई नहीं आता।

उसे चिन्ता होने लगी अब मै क्या करूँगी। वह गाँव में गई। गाँव में सरपंच और कुछ लोग बैठकर सलाह मशवरा कर रहे थे कि गाँव में नरेगा का काम शुरू करना है। मगर कहाँ क्या काम शुरू किया जाए? यह सोच विचार चल ही रहा था कि बुढ़िया वहाँ पहुँच गई। उसने उनकी बात भी सुन ली थी। वह बोली–'तालाब का पानी जल्दी सूख जाता है। क्योंकि उसका भराव कम है। अगर भराव ज्याद हो तो कभी जब बारिश न हो तब भी तालाब में पानी भरा रह सकता है।'

सरपंच को तुरंत बात समझ में आ गई। अगले ही दिन से तालाब की खुदाई का काम शुरू हो गया। गाँव के आदमी औरतें तालाब की खुदाई का काम करने लगे। इन दिनों सूखे तालाब में काम करते हुए लोग ही बुढ़िया को तालाब के फूलों की तरह दिखाई देते थे।
बुढ़िया वहाँ मजदूरों को पानी पिलाने का काम करने लगी। पंचायत की ओर से सभी को मजदूरी मिलती थी। बुढिया को भी।

बुढ़िया के जीवन का सूखापन और खालीपन कुछ हद दूर हो गया। लोगों को पानी पिलाते हुए वह उस दिन के सपने देखती रहती जब बारिश होगी और तालाब पूरा भर जाएगा। और सारे पशु पक्षी लौट आएँगे। और तालाब फिर से फूलों से भर जाएगा।

बिन्तोषी गुर्जर, शिक्षिका, फरिया।

याद की धूप छाँव में

दो दिन का साथ

मैं और भैया बगीचे में टहल रहे थे। तभी हमें चिड़िया के बच्चे की सी आवाज सुनाई दी। हमने देखा। हमारे नीम के पेड़ के नीचे एक नन्हा सा काले रंग का चिड़िया का बच्चा था। हमने उसे जाकर उठाया और देखा कि नीम में कहीं इसका घोंसला होगा जिससे ये नीचे आ गिरा। मगर हमें नीम में कोई घोंसला दिखाई नहीं दिया। ना ही उस चूजे जैसी कोई बड़ी चिड़िया दिखाई दी। हमने सोचा कि अगर उसे वहीं छोड़ जायें तो कुत्ते उसे खा जायेंगे।

हम उसे कमरे में ले आए। एक कटोरी में पानी भरा और दूसरी कटोरी में गेहूँ को बारिक पीसकर उसके पास रखा ताकि वह उसे खा जाए। मगर चिड़िया के बच्चे ने कुछ नहीं खाया। हमने बार–बार बाहर जाकर देखा कि उसे कोई पक्षी ढूँढ रहे हैं क्या? मगर हमें कोई पक्षी नहीं दिखाई दिया।

शाम हुई सभी पक्षी अपने–अपने घर जाते दिखे। उसके बाद हमने आस खो दी कि कोई उसे लेने आयेगा। हमने सोचा कि वो अपनों से बिछुड़ गया है। एक ओर हम घर में एक नए सदस्य के आ जाने की खुशी मनाते रहे। दूसरी ओर उसके अपनों से बिछुड़ जाने को लेकर अफसोस से भी भरे रहे। उससे बातें करते हुए कभी मैं उसे गोदी में उठाती तो कभी मेरा भाई। तो कभी पापा। रात में सोते समय उसे ठंड से बचाने के लिए नीचे फर्श पर दरी बिछाकर उसके ऊपर एक ढकोला रखा। उसके अंदर ही उसके खाने–पीने की कटोरी रखी। रात में वह शायद किसी डर से आवाजें करता रहा। कुछ देर मैं उसकी आवाजें सुनकर उससे बातें करती रही। फिर हम सो गये।

सुबह उसकी आवाज से ही मेरी नींद खुली। मैंने उठकर उसे ढकोले से बाहर निकाला। उसे पानी पिलाया। आज उसने पानी पी लिया था। मगर उसने गेहूँ के बारीक दाने नहीं खाए थे। मैंने सोचा ज्यादा छोटा है इस कारण इसे अभी ये खाना नहीं आता होगा। इसकी माँ इसे चोंच से कीड़े खिलाती होगी। मैंने यह भी सोचा कि इसे पालूँगी भी तो ये जिंदा नहीं रह पाएगा। मेरे भाई ने भी यही सोचा। हम दिन भर दिनभर के कामों के बीच बीच में उसके साथ बात करते–करते रहे। उसे देखते रहे। इसी तरह पूरा दिन बीत गया और ाम होने लगी। तभी हमें बाहर से बिल्कुल उस चूजे जैसी ही आवाज सुनाई दी।

मैंने और भैया ने बाहर जाकर देखा तो जिस जगह वह बच्चा हमें मिला था उसी जगह उड़ते हुए हमें वैसे ही चिड़ा–चिड़ी दिखे। हम खुश हुए और हमने चूजे को जिस टोकरी में वह रखा हुआ था उसी के साथ बाहर ले जाकर रख दिया। चूजा उन्हें देखकर आवाजें करने लगा। देखते–देखते वह बड़ी चिड़िया उस चूजे के पास आई और उसने उससे अपनी आवाज में कुछ कहा। धीरे–धीरे चूजा उड़ा और टोकरी के ऊपर किनारे पर आ बैठा। फिर उड़कर जाल पर जा बैठा। चिड़ा–चिड़ी ने उसके पास आकर अपनी आवाज में फिर कुछ कहा। चूजा उड़कर पेड़ की डाल पर जा बैठा। वे बार–बार उसे उड़ने के लिए कह रहे होंगे, तभी वह एक बाद एक ऊँचाई पर जा बैठता था।

मैं और भैया उसे देखने थोड़ा और आगे तक गए। वे तीनों पेड़ पर कुछ क्षण बैठे और फिर ऊँची उड़ान भरकर उड़ गए। यह देखकर मुझे काफी आश्चर्य हुआ कि वो चूजा पूरे दो दिन तक हमारे साथ रहा मगर एक बार भी उड़ने की कोशिश नहीं की। आज वह चिड़ा और चिड़ी के साथ हमारे देखते ही देखते उड़ गया। हमें खुशी थी कि उसे उसके अपने मिल गए थे। हमें उसका दूर जाना अच्छा तो नहीं लग रहा था लेकिन ये भी समझ में आ रहा था कि उसके लिए यही अच्छा था। मैंने और भैया ने उसकी उड़ान की दिशा में अलविदा के हाथ हिलाए।

भूमिका मीना, शिक्षिका, उमंग, मखौली।

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

चूजे का रूदन

उस दिन मैं विनोबा बस्ती शिक्षण केन्द्र पर गया था। रास्ते में गट्टू जी का घर पड़ता है। कुछ देर के लिए उनके यहाँ बैठ गया। तभी मुर्गी का एक रंग–बिरंगा चूजा वहाँ आ गया। पास ही एक जगह पर जाकर वह ऐसी आवाज करने लगा जैसे रो रहा हो। मैंने गट्टू जी से पूछा–'ये चूजा आपका है?'

उन्होंने बताया–'क्या बताएँ सुरेश जी। अभी यह खुशी–खुशी ही दाना चुग रहा था। लेकिन इस जगह पर आते ही इसे उसकी याद है और ये रोने लगता है।' मुझे बात कुछ समझ में नहीं आयी–'मतलब ये किसी की याद में रोता है?'

'हाँ यह अकेला नहीं था। ये दो थे। और इस जगह पर साथ खेलते थे।'गट्टू जी बताने लगीं –'एक दिन मेरे और मेरे लड़के बीच लड़ाई हो गई। झगड़ा इतना बढ़ गया कि केसबाज हो गई। पुलिस आ गई। मैं इन दोनों को कभी अकेला नहीं छोड़ती लेकिन उस दिन लड़की जल्दबाजी में दरवाजा कर गई। उसे लगा कि दोनों चूजे घर में ही है। लेकिन ये दोनों बाहर ही रह गए थे। और हम चले गए थे। दो–तीन घण्टे बाद जब हम लौटकर आयीं तो देखकर हैरान रह गई। ये अकेला इसी जगह पर जोर–जोर चिंचिंया रहा था। कोई चोर एक चूजे को चुरा ले गया। मुझे पक्का यकीन है बस्ती में से ही किसी ने चुराया है। क्योंकि कोई जानवर खाता तो दोनों को खाता। आपको क्या बताऊँ सुरेश जी दो दिन तक इसकी हालत देखी नहीं गई। सारी रात रोता रहा और उसे ढूँढता रहा। अब भूलने लगा है लेकिन यहाँ आकर इसे फिर याद आ जाती है और रोता है। मैं तो एक बात जानती हूँ ले जाने वाले को दोनों को ही ले जाना चाहिए था। इनकी जोड़ी को क्यों बिछुड़ाया होगा किसी ने।'

गट्टू जी के इस एकालाप को सुनकर मैं हैरान रह गया। उनके चेहरे के हावभाव देखकर मुझे लगा। चूजे से कहीं ज्यादा वे उदास हैं।
फिर मैं वहाँ से चला आया लेकिन पूरे रास्ते गट्टू जी और चूजे की उदासी के बारे में ही सोचता रहा। एक चूजे का चले जाना उनके जीवन में कितनी बड़ी घटना थी।

सुरेश चंद, शिक्षक, डीएनटी, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र।

सुख-दुख

शीत ऋतु थी
मगर संक्रांति के त्यौहार का दिन
सरसों की पीले फूलों की लूगड़ी लहरा रही थी
गेहूँ में बालियाँ निकलना शुरू हो गई थी
गाँव से लोग त्यौहार मनाने रिश्तेदारियों में जा रहे थे
चनों में अंकुर बनना शुरू हो गया था
बच्चे किलक रहे थे
हरे खेतों में लाल मिर्च लदी हुई थी
स्त्रियों ने घरों में पुआ, पूड़ी, खीर और बड़े बनना शुरू कर दिया था

तभी आँधी बरसात शुरू हो गई
चूल्हे बुझ गए
ओले गिरने लगे
बच्चे घरों में दुबक गए
खेत पानी में डूब गए
गाँव के लोग सभी और रिश्तेदार सभी
रोते चिल्लाते खेतों की ओर दौड़े
वे काँप रहे थे
हताश हाथों से चेहरे ढाँप रहे थे

सुमेर बैरवा, शिक्षक, डीएनटी, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र।

बात लै

रेजाहाड़ो

अेक बार अेक रेजा हाड़ो रजाई बेचबा काणैं घर सूं गीयो। गेला मं अेक आँकड़ा कौ पेड़ हीयो। आँकड़ा कौ पेड़ हवा मं हाल रीयो हो। रेजा हाड़ा नं सोची के या रजाई माँग रीयो छै। उनं ऊकू उडा दी। फेर हवा चाली फेर आँकड़ो हाल्यो। रेजाहाड़ा नं सोची के और माँग रीयो छै। उनं सबड़ी ही रजाई आँकड़ा कू उडा दी।
रेजाहाड़ा ने की के –'पीसा।'
हवा सूं आँकड़ा को माथौ हालग्यौ।
रेजाहाड़ा नं की के–'ठीक च। कोई बात नं। अबार थारै गोड नं च तो क्आल दे दीज्यौ।'
अस्याँ केर रेजाहाड़ौ घर नं आ गीयो।

रेजाहाड़ा की घरआड़ी घणी राजी होयी के आज तौ सबड़ी ही रजाई बेच्यायौ। उनं पूछी कि 'कतना की बेच्याऔ रजाई। कतना पीसा मलग्या।'
रेजाहाड़ा नं जे बात ची ऊकू बता दी।
घराड़ी बोली–'अब क अब चाल म्हारै लारै। नगद पीसा लेर आवैंगा। हुदार कौ कॉई काम च।'
रेजाहाड़ा नं की के 'अब तौ रात हेगी। सुंवारै बेगाइ चालैंगा।'

रेजाहाड़ा की घराड़ी नं तो नींद नं आई। सुंवारै बेगाइ गीया दोनी जणां। जातांई की आँकड़ा सूं के –'ला रै भाया म्हारा पीसा।'
हवा चाल री छी। आँकड़ो हाल र्‌यौ छौ।
रेजाहाड़ा की घराड़ी बोली–'माथौ हलाबासूं काम कोनीं चालैगो। पीसा तोकू अबार देणां पड़ींगा। और बे रजाई खां च। कटी धर्‌यायौ।'
हवा को अस्यौ झकौड़ौ आयौ के आँकड़ो घणी जोर सूं हाल्यौ।
रेजाहाड़ा की घराड़ी बोली–'नटबा को काम कोनी च। हाल साल पीसा गण दै।'
आँकड़ो तो बर बर की मं वाई मूंड हलावै।
अतनां मं रेजाहाड़ा कू आ गीयौ जोरदार गुस्सौ। उनं ऊ आँकड़ा कू उखाड़ परां बगा दीयौ। रेजाहाड़ा की घराड़ी नं देखी के आँकड़ा की जड़ मं अेक माटी की कूलड़ी धरी ची। उनं ऊकै मायां देखी तो चाँदी का सिक्का छा।
लेर घर नं आगी।
रेजाहाड़ा नं की के अस्याँ रजाई का टैम पै चोखा पीसा मल जावै तो आंपणा काम मं कोई खोट नं च।
'म्हनत को पीसौ खां ज्याच जी।' रेजाहाड़ा की घराड़ी चाँदी का सिक्का गणती जारी छी और घणी राजी हेती जा री छी।

विकासी मीना, पुनर्लेखन – प्रभात

चीत लै

बतरस

(इकतारा की पत्रिका 'प्लूटो' से साभार।)

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1
आगरा सूं आयौ भोपो
चार कान एक टोपो।

2
माधोपुर सूं आयी रीछड़ी
छह पाँव एक पूँछड़ी।

3
अेक झाड़ मं तीस डाळी
आदी धौळी आदी काळी।

4
भूड मं भूडोल्यो खेले
पूँछ म्हारा हाथ मं।

5
हरी टोपी लाल दुसाला
पेट मं मोती की माळा।

6
सात कुराळ्या सात डाळ
नीं कटे नीबू की डाळ।

7
हर्यौ डब्बो पीळो मकान
मायां बैठ्या काळूराम।

8
धौळौ घोड़ो झाबरी पूँछ
नीं जाणैं तो थारा भाई सूं पूछ।

9
बाप रेग्यो डूँगर मं
बेटी आगी पंचन मं।

10
अगल बगल घास फूँस बीच में तबेलो
दिन मे तो भीड़भाड़ाकौ रात मं अकेलो।

(ये पहेलियाँ उदय किरण कार्यक्रम के फेलोज की वर्कशॉप में संकलित की गई।)

हीहीही-ठीठीठी

1

शादी में अनजान व्याक्ति को खाते देखकर घरवाले ने पूछा–
'माफ कीजिएगा आपको निमंत्रण दिया गया था क्या?'
अनजान व्यक्ति गरम होते हुए बोला–'नहीं दिया तो मेरी गलती है क्या।'

2

गोलू – भाई मुझे देखना आता है।
मोलू – तो देखना भाई।
गोलू – तुम्हारे घर के नीचे बहुत धन है।
मोलू – सही है भाई। मेरे घर के नीचे एसबीआई बैंक हैं।

3

टीचर –कल होमवर्क करके नहीं लाए तो मुर्गा बनाऊँगा।
पप्पू– सॉरी सर मुर्गा मैं नहीं खाता। आप मटर पनीर बना लेना।

4

टिंकू –किस बात से परेशान हो?
पिंकू – घरवालों से।
टिंकू– घरवालों ने क्या किया है?
पिंकू– जिस दिन भी सोचता हूँ कि कुछ नया करूँगा,
उस दिन घरवाले गेहूँ पिसवाने भेज देते
हैं यार।

5

चमकू– स्टेशन तक कितना लोगे?
रिक्शेवाला – पचास रुपये।
चमकू– बीस ले लो।
रिक्शेवाला – बीस में कौन ले जाएगा।
चमकू – तुम पीछे बैठो। हम ले जाएँगे।

गतिविधि :

मोरंगे के 'हीहीही–ठीठीठी' स्तम्भ के लिए पत्र लिखकर भेजिए। चुटकुलों पर आधारित कार्टून बनाकर भेजिए। चुटकुले के पात्रों के हावभाव के रेखाचित्र या चित्र बनाइए और संवादों को गुब्बारे की आउटलाइन बनाकर उसमें लिखिए।

पहेलियों के जवाब

1 लौंग 2 ताखड़ी 3 दन–रात 4 खुरपो 5 मर्ची 6 छांयौ 7 अरण्डकाकड़ी 8 मूळी 9 छीला का पान 10 पनघट।